नोट दे दे बाबा!

भिखारियों से जुड़ा एक दिलचस्प तथ्य यह है कि भिखारियों की आउटसोर्सिंग भी हो रही है। कोलकाता में पिछले दिनों ऐसे ही एक नए धंधे का खुलासा हुआ।

भिखारी और करोड़पति! शायद आप हैरान हो रहे होंगे, लेकिन यह सच्चाई है कि जिन भिखारियों को आप गाहे-बगाहे दुत्कार देते हैं या कुछ पैसे दे देते हैं, हो सकता है उनमें से कुछ लखपति या करोड़पति भी हों। भीख में ज्यादा पैसा मिलने की वजह से अब बहुत से 'भिखारियों' के अंदाज भी बदलने लगे हैं। वे अब पैसे की बजाए नोट, डॉलर और निश्चित राशि तक मांगने लगे हैं। भीख के इस दिलचस्प कारोबार और रईस भिखारियों पर कमलेश माहेश्वरी की खास पड़ताल-

दक्षिणी दिल्ली का एक ट्रैफिक सिग्नल। सुबह के करीब 10 बजे हैं। चारों ओर भारी गहमागहमी और जाम जैसा माहौल है। ऐसे में कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने शिकारों पर गिद्ध-दृष्टि जमाए बैठे हैं। ये शिकारी वे भिखारी हैं, जो अब मजबूर नहीं पेशेवर के रूप में भीख मांगते हैं। उन्हें न तो दया और लाचारी चाहिए और न ही आपके बचे-खुचे सिक्के, अब वे नोट और डॉलर मांगते हैं। अपने इलाके और सिग्नल बांटने के साथ उन्होंने अपने ग्राहकों का भी वरीयता क्रम बना रखा है। उन्हें महंगी और बड़ी गाड़ियों वालों की अच्छी समझ है और सबसे पहले वे उन्हीं को पकड़ते हैं, इसके बाद दोपहिया वाहनों पर सवार बनी-ठनी महिलाएं, लड़कियां और मस्तमौला युवा निशाने पर होते हैं। सबसे आखिरी में नंबर आता है साइकिल सवारों और पैदल चलने वालों का। भिखारियों का पूरा सिस्टम ऐसा फिट है कि उनसे बच पाना मुश्किल होता है, और अगर किसी तरह बच गए तो फिर उनकी तीखी आंखों और व्यंग्य बाण बहुआ आपको अंदर तक बेध जाते हैं। यही नहीं भिखारियों की फौज तैयार करने को कई बेनाम संस्थान चालू हैं।

भिखारियों से जुड़ा एक दिलचस्प तथ्य यह है कि भिखारियों की आउटसोर्सिंग भी हो रही है। कोलकाता में पिछले दिनों ऐसे ही एक नए धंधे का खुलासा हुआ। यहां एक चतुर दिमाग वाले शख्स ने भिखारियों के लिए ऐसी ऑउटसोर्सिंग एजेंसी खोल रखी है, जो किराए पर बच्चे उपलब्ध कराती है। इस एजेंसी के ग्राहक हैं ऐसे स्थापित भिखारी, जिनके इलाके बंटे हुए हैं और जो भीख के लिए मासूमियत को कैश कराते हैं। इस नेटवर्क में करीब एक हजार परिवार और दो हजार से ज्यादा भिखारी जुड़े हुए हैं। ये लोग इस एजेंसी के मार्फत गरीब परिवारों से दिनभर के लिए बच्चे किराए पर लेते हैं। हर रोज सुबह 4 बजे यह कारोबार शुरू होता है और शाम 4 बजे तक चलता है। बच्चा जितना छोटा होता है, उसका किराया उतना ही ज्यादा होता है। इसमें नवजात से लेकर तीन साल तक के असहाय बच्चों की भारी मांग है। इन बच्चों का दिनभर का किराया 50 से लेकर 150 रुपए तक है। दोनों ही पार्टियों के हिस्से का 20 से 30 फीसदी एजेंसी बतौर दलाली काट लेती है। भिखारी और बच्चों के साथ गरीब मां-बाप झुंड में हर रोज रेलवे स्टेशनों आदि पर जमा होते हैं और एजेंसी के दलालों के मार्फत सौदा पटता है।

ज्यादातर बच्चे दिनभर भूखे ही रहते हैं क्योंकि भिखारी भी अपनी कमाई का गणित लगाता रहता है और इनका भरपूर शोषण करता है। भिखारियों का मानना है कि भूख-प्यास से बिलबिलाते बच्चे ज्यादा कमाई करवाते हैं। इस एजेंसी के मालिक का नाम मोंटू पाल बताया गया और जब उसके ठिकाने पर

गरीब परिवारों से दिनभर के लिए बच्चे किराए पर लेते हैं। हर रोज सुबह 4 बजे यह कारोबार शुरू होता है और शाम 4 बजे तक चलता है। बच्चा जितना छोटा होता है, उसका किराया उतना ही ज्यादा होता है। इसमें नवजात से लेकर तीन साल तक के असहाय बच्चों की भारी मांग है। इन बच्चों का दिनभर का किराया 50 से लेकर 150 रुपए तक है। दोनों ही पार्टियों के हिस्से का 20 से 30 फीसदी एजेंसी बतौर दलाली काट लेती है। भिखारी और बच्चों के साथ गरीब मां-बाप झुंड में हर रोज रेलवे स्टेशनों आदि पर जमा होते हैं और एजेंसी के दलालों के मार्फत सौदा पटता है।

पुलिस दबिश हुई तो पूर्व सूचना के चलते वह भाग निकला। कुछ भिखारियों से पता चला है कि उसका अस्तित्व है और नेटवर्क के साथ कारोबार फल-फूल रहा है। कोलकाता से कुछ दूर सियालदेह, गारिया और सोनारपुर के रेलवे स्टेशनों से इस एजेंसी का नेटवर्क चल रहा है।

मालामाल भिखारी

करोड़पति भिखारी भगत

मुंबई का छत्रपति शिवाजी टर्मिनल संभवत: देश के सबसे अमीर भिखारियों का एक खास ठिकाना है। इस ठिकाने का सबसे अमीर भिखारी है भरत भगत। मुख्य स्टेशन और उसके आसपास के इलाके के इस भिखारी सरदार के पास 70 लाख से ज्यादा की तो सिर्फ अचल संपत्ति है। 50 की उम्र वाले इस शातिर ने परेल जैसी महंगी जगह में दो फ्लैट (कीमत करीब 50 लाख) और भांडुप में एक दुकान खरीद रखी है। दुकान का किराया ही सात हजार रुपए महीना आता है। अक्षर ज्ञान से ज्यादा शिक्षित भरत फर्राटेदार अंग्रेजी बोलकर विदेशियों को रिझाने में माहिर है। उसके परिवार में पत्नी, दो बेटे, पिता और भाई हैं। मृदुभाषी भरत बड़े सलीके से भीख मांगता है और विनम्रता से पेश आकर तंग-जेबें भी ढीली करवा लेता है। उसकी दिनभर की कमाई करीब 500 से तीन हजार रुपए तक है।

दो फ्लैट वाला लखपति मासू

मुंबई के लोखंडवाला का मालना ऊर्फ मासू भिखारियों की बिरादरी में एक बड़ी हस्ती हैं। 60 साल से ज्यादा उम्र के इस फटेहाल को देखकर कोई नहीं कह सकता कि यह अकेला 30 लाख से ज्यादा की अचल संपत्ति का मालिक है। उसके पास अंधेरी जैसी जगह में दो फ्लैट हैं, जहां वह अपनी पत्नी, दो बेटों और एक बेटी के साथ रहता है। मासू की कर्मभूमि है लोखंडवाला इलाके के ऐसे हाई-फाई रेस्तरां, जहां टीवी और फिल्मी सितारों का आना-जाना लगा रहता है। बरसों से कारगर अपने जुमलों से वह दिनभर में एक से डेढ़ हजार रुपए आसानी से कमा लेता है। रोज सुबह वह अपने फ्लैट से ऑटो रिक्शा में साफ-सुथरे कपड़े पहनकर निकलता है, पर साथ में भिखारी-यूनिफार्म भी होती है। अपने इलाके में पहुंचकर वह भिखारी रूप धारण करता है और पड़ताल करता है कि उसके इलाके में किसी और भाई-बंद ने घुसपैठ तो नहीं की है। इलाके के एक चक्कर के बाद उसका दिनभर का भीख-कार्यक्रम शुरू हो जाता है। शाम होते ही यह फिर से नए अवतार में ऑटो लेकर घर पहुंच जाता है। मासू ने और कितना जमा किया है इस सवाल पर वह चुप रहना पसंद करता है।

भारत में भिखारी, बांग्लादेश में सेठ मोहम्मद जकिर नाम के इस अवैध बांग्लादेशी भिखारी से तो दुनियाभर के भिखारियों को ईर्ष्या हो सकती है। बचपन में एक हादसे में दोनों हाथ गंवा चुके इस विकलांग ने भारत के दयालुओं की भीख से बांग्लादेश में 75 लाख से ज्यादा की संपत्ति बना ली है। इसका खुलासा पिछले दिनों तब हुआ जब उसे भारतीय पुलिस ने धर-दबोचा। पूछताछ में जकिर ने बताया, 'मैं मोहम्मदपुरा, बांग्लादेश का रहने वाला हूं और 1986 में चोरी-छुपे बंगाल के रास्ते भारत में घुस आया था। उसके बाद मुंबई आ गया और यहां गेटवे ऑफ इंडिया के आसपास भूख व लाचारी से मारा-मारा फिरने लगा। हताश होकर विकलांगता को हथियार बनाया और भीख मांगने लगा। बदले में मैंने भी जी-भर दुआएं बांटीं। धीरे-धीरे पैसा जमा होता गया और मैं उसे अपने देश भेजने लगा। इस दौरान मैं भी कई बार वहां गया। कुछ समय बाद मैंने नसीमा नाम की एक लड़की से शादी रचाई और मूर्तिनगर इलाके में एक घर भी खरीदा। मेरे पांच बच्चे भी हैं। मैं दिन भर के हजार-पांच सौ कमा लेता था, लेकिन मेरी आमदनी कम होने लगी तो मैं अजमेर आ गया। यहां उर्स और ऊंचे लोगों की आवाजाही से धंधा जमा ही था कि मैं पकड़ा गया।' जकिर की संपत्ति का खुलासा इंटेलीजेंस सूत्रों ने भी किया है।

बिहार के बाबा, कोलकाता की माई बिहार के सारन जिले के अरवन गांव में पिछले दिनों 70 साल का एक भिखारी मस्तान बाबा नहीं रहा। ताज्जुब हुआ उसकी संपत्ति पर, जो वह अपने पीछे छोड़ गया था। मस्तान बाबा अपने पीछे करीब डेढ़ लाख रुपए की संपत्ति छोड़ गया, जिसमें सवा लाख से ज्यादा तो नगद थे। इसके अलावा 100 से ज्यादा नई लुंगियां, गंजिया और गमछे थे। सारा नगदी पैसा उसने टाट के थैलों में भर रखा था और उसे अपनी खटिया के नीचे की जमीन में दबाकर उसके ऊपर ईंटें रख दी थीं। मस्तान बाबा की मौत की खबर सुनकर पड़ोस के गांव से उसके भाई समेत कई रिश्तेदार संपत्ति के लालच में आ धमके, लेकिन गांव की पंचायत ने दखल देकर उन्हें सबकुछ हड़पने नहीं दिया। आधा धन रिश्तेदारों को मिला, जबकि एक तिहाई मदरसे के गरीब बच्चों की भलाई के लिए और बाकी मस्तान के अंतिम संस्कार के काम आया। इसी तरह पिछले दिनों कोलकाता में एक ऐसी बूढ़ी भिखारिन सामने आई जिसने भीख मांगकर 100 किलो से ज्यादा सिक्के जमा कर लिए। करीब 60 साल की यह भिखारिन कोलकाता स्टेशन के आसपास के व्यस्त इलाके में भीख मांगती है और वहीं पास में ही रहती है।

हर जगह इनका जलवा. .

यदि आपका चंडीगढ़ जाना हो तो वहां के मालदार लोगों की तरह वहां के भिखारी भी आपको हैरान कर देंगे। यहां के मशहूर नेकचंद गार्डन और सेक्टर 16-17 के आसपास भीख मांगते एक बाबा ऐसे हैं, जो पॉश होटल में रहते हैं, इंपोर्टेड सिगरेट के कश लगाते हैं, उनके पास टीवी, डीवीडी और मोबाइल भी हैं। ये जनाब अपने इलाके में बड़ी भिखारियत से रहते हैं, पर अपने असली ठिकाने पर इनके रंग देखने लायक हैं। ये बड़े जुगाड़ लगाने में माहिर हैं और इन्होंने लाखों की संपत्ति भी बना ली है। शिमला में भी ऐसे ही एक भिखारी ने पाई-पाई जोड़ अचल संपत्ति बना ली और उसे किराए पर भी दे दिया। दिलचस्प बात है कि ये सभी अमीर भिखारी पहले की तरह अपने धंधे से जुड़े हैं और आगे भी जुड़े रहने की मंशा रखते हैं।